एक गोत्र में शादी क्यों वर्जित है ??

पिता का गोत्र पुत्री को प्राप्त नहीं होता । अब एक बात ध्यान दें कि स्त्री में गुणसूत्र XX होते हैं और पुरुष में XY होते हैं । इनकी सन्तति में माना कि पुत्र हुआ (XY गुणसूत्र) । इस पुत्र में Y गुणसूत्र पिता से ही आया । यह तो निश्चित ही है क्यूँ कि माता में तो Y गुणसूत्र होता ही नहीं । और यदि पुत्री हुई तो (XX गुणसूत्र) । यह गुणसूत्र पुत्री में माता व पिता दोनों से आते है ।

1. XX गुणसूत्र; XX गुणसूत्र अर्थात् पुत्री । XX गुणसूत्र के जोड़े में एक X गुणसूत्र पिता से तथा दूसरा X गुणसूत्र माता से आता है तथा इन दोनों गुणसूत्रों का संयोग एक गाँठ सी रचना बना लेता है । जिसे Crossover कहा जाता है ।

2. XY गुणसूत्र; XY गुणसूत्र अर्थात् पुत्र । पुत्र में Y गुणसूत्र केवल पिता से ही आना संभव है क्यूँकि माता में Y गुणसूत्र है ही नहीं । और दोनों गुणसूत्र असमान होने के कारण पूर्ण Crossover नहीं होता । केवल 5% तक ही होता है । ज्यों का त्यों (Intact) ही रहता है ।

तो महत्वपूर्ण Y गुणसूत्र हुआ । क्यूँकि Y गुणसूत्र के विषय में हम निश्चिंत है कि यह पुत्र में केवल पिता से ही आया है । बस इसी Y गुणसूत्र का पता लगाना ही गौत्र प्रणाली का एकमात्र उद्देश्य है जो हमारों/लाखों वर्ष पूर्व हमारे ऋषियों ने जान लिया था ।

वैदिक गौत्र प्रणाली और Y गुणसूत्र । Y Chromosome and The Vedic Gotra System अब हम यह समझ चुके है कि वैदिक गौत्र प्रणाली व गुणसूत्र पर आधारित है अथवा Y गुणसूत्र को Trace करने का एक माध्यम है ।

उदाहरण के लिए यदि किसी व्यक्ति का गौत्र कश्यप हैं तो उस व्यक्ति में विद्यमान Y गुणसूत्र कश्यप ऋषि से आया है या कश्यप ऋषि उस Y गुणसूत्र के मूल हैं । चूँकि Y गुणसूत्र स्त्रियों में नहीं होता यही कारण है कि विवाह के पश्चात स्त्रियों को उसके पति के गौत्र से जोड़ दिया जाता है ।

वैदिक / हिन्दू संस्कृति में एक ही गौत्र में विवाह वर्जित होने का मुख्य कारण यह है कि एक ही गौत्र से होने के कारण वह पुरुष व स्त्री भाई बहिन कहलाये । क्यूँ कि उनका पूर्वज एक ही है । परंतु ये थोड़ी अजीब बात नहीं कि जिन स्त्री व पुरुष ने एक दूसरे को कभी देखा तक नहीं और दोनों अलग अलग देशों में परंतु एक ही गौत्र में जन्में तो वे भाई बहिन हो गये ??

इसका एक मुख्य कारण एक ही गौत्र होने के कारण गुणसूत्रों में समानता का भी है । आज की आनुवांशिक विज्ञान के अनुसार यदि समान गुणसूत्रों वाले दो व्यक्तियों में विवाह हो तो उनकी सन्तति आनुवांशिक विकारों का साथ उत्पन्न होगी ।

ऐसे दम्पत्तियों की संतान में एक सी विचारधारा, पसंद, व्यवहार आदि में कोई नयापन नहीं होता । ऐसे बच्चों में रचनात्मकता का अभाव होता है । विज्ञान द्वारा भी इस संबंध में यही बात कही गई है कि सगौत्र शादी करने पर अधिकांश ऐसे दम्पत्ति की संतानों में अनुवांशिक दोष अर्थात् मानसिक विकलांगता, अपंगता, गंभीर रोग आदि जन्मजात ही पाये जाते हैं । शास्त्रों के अनुसार इन्हीं कारणों से सगौत्र विवाह पर प्रतिबंध लगाया था । इस गौत्र का संवहन यानी उत्तराधिकारी पुत्री को एक पिता प्रेषित न कर सके । इसलिये विवाह से पहले कन्यादान कराया जाता है और गौत्र मुक्त कन्या का पाणिग्रहण कर भावी वर अपने कुल गौत्र में उस कन्या को स्थान देता है यही कारण था कि विधवा विवाह भी स्वीकार्य नहीं था । क्यूँकि कुल गौत्र प्रदान करने वाला पति तो मृत्यु को प्राप्त कर चुका है ।

इसीलिये, कुंडली मिलान के समय वैधव्य पर खास ध्यान दिया जाता और मांगलिक कन्या होने से ज्यादा सावधानी बरती जाती है। आत्मज् या आत्मजा का संधि विच्छेद तो कीजिये ।

आत्म+ज या आत्म+जा । आत्म = मैं, ज या जा = जन्मा या जन्मी । यानि जो मैं ही जन्मा या जन्मी हूँ । यदि पुत्र है तो 95% पिता और 5% माता का सम्मिलन है । यदि पुत्री है तो 50% पिता और 50% माता का सम्मिलन है । फिर यदि पुत्री की पुत्री हुई तो DNA 50% का 50% रह जायेगा । फिर यदि उसके भी पुत्री हुई तो उस 25% का 50% DNA रह जायेगा । इस तरह से सातवीं पीढ़ी में पुत्री जन्म में यह % घट कर 1% रह जायेगा ।

अर्थात् एक पति पत्नी का ही DNA सातवीं पीढ़ी तक पुन: पुन: जन्म लेता रहता है, और यही है सात जन्मों का साथ । लेकिन जब पुत्र होता है तो पुत्र का गुणसूत्र पिता के गुणसूत्रों का 95% गुणों को अनुवांशिकी में ग्रहण करता है और माता का 5% (जो कि किन्हीं परिस्थितियों में एक % से कम भी हो सकता है) DNA ग्रहण करता है । और यही क्रम अनवरत चलता रहता है, जिस कारण पति और पत्नी के गुणों युक्त DNA बारम्बार जन्म लेते रहते हैं । अर्थात् यह जन्म जन्मांतर का साथ हो जाता है । इसीलिये, अपने ही अंश को पित्तर जन्मों जन्म तक आशीर्वाद देते रहते हैं और हम भी अमूर्त रुप से उनके प्रति श्रद्धेय भाव रखते हुए आशीर्वाद ग्रहण करते रहते है । और यही सोच हमें जन्मों तक स्वार्थी होने से बचाती है और संतानों की उन्नति के लिये समर्पित होने का संबल देती है ।

एक बात और, माता पिता यदि कन्यादान करते हैं, तो इसका यह अर्थ कदापि नहीं है कि वे कन्या को कोई वस्तु समकक्ष समझते हैं बल्कि इस दान का विधान इस निमित्त किया गया है कि दूसरे कुल की कुलवधू बनने के लिये और उस कुल की कुल धात्री बनने के लिये, उसे गौत्र मुक्त होना चाहिये । DNA मुक्त हो नहीं सकती क्योंकि भौतिक शरीर में वे DNA रहेंगे ही । इसलिये मायका अर्थात माता का रिश्ता बना रहता है । गौत्र यानी पिता के गौत्र का त्याग किया जाता है तभी वह भावी वर को यह वचन दे पाती है कि उसके कुल की मर्यादा का पालन करेगी यानी उसके गौत्र और DNA को Corrupt नहीं करेगी। वर्णसङ्कर नहीं करेगी । क्योंकि कन्या विवाह के बाद कुल वंश के लिये रज् का रजदान करती है और मातृत्व को प्राप्त करती है । यही कारण है कि हर विवाहित स्त्री माता समान पूज्यनीय हो जाती है । यह रजदान भी कन्यादान की तरह उत्तम दान है जो पति को किया जाता है ।

यह सूचिता अन्य किसी सभ्यता में दृश्य ही नहीं है ।

संकलन – नीलम जैन, विदिशा

अज्ञान का नाश हो जाये और ज्ञान प्रकट हो जाये उसे प्रभावना कहते है – मुनि सुब्रत सागर

पावागिरीजी में कलशाभिषेक और फूल माल के साथ हुआ चार दिवसीय वार्षिक मेले का समापन हुआ । भोंयरे जी की नवनिर्मित वेदी पर मूलनायक भगवान सहित सात जिनबिम्बों को किया विराजमान ।

विशाल जैन, पवा (तालबेहट) । बुंदेलखंड के ऐतिहासिक विश्व प्रसिद्ध सिद्धक्षेत्र पावागिरी की पावन धरा पर प्रतिवर्ष की भांति अगहन कृष्ण द्वितीय से पंचमी तक वात्सल्य मूर्ति, कवि हृदय, बुंदेली संत मुनि सुव्रत सागरजी महाराज के मंगलमय सानिध्य में 14 नवम्बर को अतिशययुक्त चमत्कारी बाबा मूलनायक भगवान पारसनाथ स्वामी के मस्तकाभिषेक से चार दिवसीय वार्षिक मेले का शुभारंभ हुआ । तत्पश्चात विश्व शांति की मंगल कामना के साथ मुनिश्री के मुखरबिंद से मंत्रोच्चार के मध्य शांतिधारा का आयोजन किया गया । दोपहर की बेला में आचार्य विद्यासागरजी महाराज का 47वां आचार्य पदारोहण दिवस मनाया । इस मौके पर मुनिश्री ने मेरा मंगल तेरा मंगल सबका मंगल होवे, सुखिया होवे सारी दुनिया कोई दुखी न होवे पंक्तियों से अपना मंगल प्रवचन शुरु किया एवं धर्म सभा को संबोधित करते हुए कहा कि जीवन में मोक्ष मार्ग प्रशस्त करने के लिए सिद्ध क्षेत्र पर स्वर्णभद्रादि मुनिराजों के निर्वाण महोत्सव कार्यक्रम का आयोजन निश्चित ही पुण्योदय का कारण है । उन्होंने कहा कि हमें कभी साधुओं की अवेहलना नहीं करना चाहिए जो कि बहुत ही पाप बंध का कारण है । मेले के अंतिम दिन सुबह बा.ब्र. संजय भैया मुरैना, बा.ब्र. हरीश भैया एवं पं. विनोद कुमार शास्त्री के निर्देशन में भोंयरे में नवनिर्मित वेदी पर मूलनायक भगवान सहित सात जिनबिम्बों को विराजमान किया गया ।

विभिन्न श्रद्धालुओं ने अतिशययुक्त चमत्कारी बाबा मूलनायक पारसनाथ भगवान का मस्तिकाभिषेक, शांतिधारा की एवं भोंयरे की नवनिर्मित वेदी पर मूलनायक भगवान सहित सात जिनबिम्बों को कमलासन विराजमान किया । अहिंसा सेवा संगठन के संस्थापक विशाल जैन पवा ने बताया कि अति प्राचीन भोंयरेजी में मूलनायक भगवान परसनाथ के अतिरिक्त बड़े बाबा आदिनाथ, अजितनाथ, संभवनाथ, मल्लिनाथ, नेमीनाथ की मूर्तियां हैं, जिसे भौंयरे जी में नवनिर्मित वेदी पर वीर व्यायामशाला ललितपुर के सहयोग से विराजमान किया गया।

इस मौके पर मुनिश्री ने धर्मसभा को संबोधित करते हुए कहा कि हमें हमेशा विश्व शांति की मंगल कामना करना चाहिए । उन्होंने कहा अन्य क्षेत्रों पर किये गये पाप तो तीर्थक्षेत्र पर कट जाते हैं, लेकिन तीर्थ क्षेत्रों पर किये गये पाप भविष्य में कभी नहीं कटते । मुनिश्री ने कहा कि यदि कहीं आग लग जाये तो पानी डालकर उसे बुझाया जा सकता है, लेकिन यदि हृदय में ईर्ष्या की अग्नि लग जाये तो सागर का पानी उड़ेल दिया जाये लेकिन उस आग को बुझा नहीं सकते । मेला महोत्सव के अंतिम दिन क्षेत्र प्रांगण में जनसैलाब उमड़ पड़ा । क्षेत्र की वेदियों के समस्त जिनबिंब के शिखरों पर ध्वजारोहण किया गया । दोपहर की बेला में क्षेत्र का वार्षिक अधिवेशन संपन्न हुआ । प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी **गोलालारीय दर्शन परिवार** की ओर से जैन तिथि दर्पण का नि:शुल्क वितरण किया गया । इस कार्य को इन्दौर समाज अध्यक्ष श्री कोमलचंदजी जैन व सचिव श्री बाहुबली जैन गत 10 वर्षों से निरंतर पर क्षेत्र पर करते आ रहे है ।

दया धर्म का पालन करने हेतु मुनि पिच्छिका परिवर्तन करते हैं : आचार्यश्री विद्यासागरजी

शिरीष जैन, इन्दौर । चातुर्मास के बाद दिगम्बर जैन संतों के संयम उपकरण पिच्छिका का प्रतिवर्ष परिवर्तन किया जाता है। इसी श्रृखंला में नेमावर में आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज और मुनि संघ का पिच्छिका परिवर्तन समारोह हुआ । पिच्छिका परिवर्तन के समय मुनि महाराजों को नई पिच्छिका देने और पुरानी पिच्छिका लेने के कठोर नियम हैं । जो श्रावक परिवार सहित इन नियमों का पालन की प्रतिज्ञा करें और संयम से जीवनयापन का संकल्प लेता है उसे ही मुनि महाराजों की पिच्छिका देते है ।

पिच्छिका देने का सौभाग्य गोटेगांव के अभिषेक व उनकी पत्नी को प्राप्त हुआ । दोनों की उम्र क्रमश: 39 व 36 वर्ष है. इस दपंती ने आजीवन व्रत धारण करने की प्रतिज्ञा लेकर विद्यासागरजी महाराज की पुरानी पिच्छिका लेने का पुण्य प्राप्त किया ।

पिच्छिका परिवर्तन से दया धर्म का पालन हो पाता हैं । इस अवसर पर आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज ने कहा कि साल भर मुनिचर्या का पालन करते हुए जब पिच्छी के पंख कड़क हो जाते है तब जीवों को नुकसान पहुंचता हैं । तब अहिंसा धर्म का पालन करते समय परेशानी का अनुभव होता है । दया धर्म का पालन करने के लिए श्रावक जन अपने यहां साधनारत मुनियों को नई पिच्छिका देते हैं । आचार्यश्री ने कहा कि पिच्छिका परिवर्तन से दयाधर्म का पालन हो पाता है । जैसे पंख आने पर पंछी उड़ जाते है, उसी तरह नई पिच्छी आने पर साधुओं का विहार होने लगता है । आचार्यश्री ने कहा कि सयंम बहुत दुर्लभ है ।